pISSN: 2321-7006, eISSN: 2321-7294

## Hindi Poem

# प्लास्टिकासुर

न भस्म होवे, न दफन होवे
न विसर्जित होवे, न दहन
हे निर्जीव (प्लास्टिकासुर) वास्तु
हताश है तेरे आगे विश्व के जन.

क्या उखाड़ लेगा कपड़ा, कांच, कागज़
खाएं न कोई मेल
हर पग पर तोहरी मुलाकात
होवे हर परीक्षा में फेल

पञ्च महाभूतों से भी परे
अष्ट चिरंजीवियों से भी दीर्घायु
मानव आविष्कार की खोज
कर दे जीवन हर प्रकार अल्पायु

खुली हैं आंखें फिर भी देख न पाएं
धृतराष्ट्र सारे यहीं खड़े
दुर्योधन सी तेरी मजबूत भुजाएं
नस, फेफड़े, आंत, सभी तू जब जकड़े

सारे हैं अभिमन्यु तेरे रचित चक्रव्यूह में
आना मात्र जानते अन्दर सहज
जब जीवन के लिए लड़ना हो तो
टिक न पाते एक पल भी महज

कामना करता हूँ मैं (काल) एक ही
अर्जुन जैसे सीधा वार तुझपर लगाए
देर सही पर खोखली कालिख से
सारथी ही शायद अब आखिरकार बचाए

करें अपमान जब दुकानदार
पन्नी प्लास्टिक की न खिसकाएँ
शाबाशी देकर पार्थ तू
उस बेक़सूर की मनोकामना बढाएं

माताजी जब बाज़ार भिजवाएं
श्रवण की भांति अपनी पन्नी साथ ले जाएं
नरकासुर, रावन, बकासुर, कुम्भकरण जैसी तेरी शक्ति
इस सरल, सहज कार्य से खाक में मिल जाए

आओ इस विजयदशमी के पावन पर्व पर
बापू / शास्त्री जी के जन्मदिवस पर
प्लास्टिकासुर का बहिष्कार करें
जड़ से उखाड़ें, घर, ऑफिस, और मन में स्थान न दें
तनिक भी नहीं

डॉ. सागर बोरकर
सामाजिक चिकित्साः विभाग
डॉ राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल